दीवसागरणपण्णत्तिपइण्णयं (फोल्डर नं. ११४१)

मुख्य टाइटल
प्रकाशकीय
प्रस्तुत प्रकाशन के अर्थ सहयोगी
विषयानुक्रम
भूमिका---------- १-७६
मानुषोत्तर पर्वत – १-१८ ---------- २-५
नलिनोदक आदि सागर – १९२४ ---------- ५-७
नन्दीश्वर द्वीप – २५---------- ७
अंजन पर्वत और उनके ऊपर जिनदेव के मंदिर – २६-४७ ---------- ७-११
दधिमुख पर्वत और उनके ऊपर जिनदेव के मंदिर – ४८-५१ ---------- ११
अंजन पर्वतों की पुष्करिणियाँ – ५२-५७ ---------- १३
रतिकर पर्वत और शक्र ईशान देव-देवियों की राजधानियाँ – ५८-७०१ ---------- १३-१५
कुण्डल द्वीप – ७१---------- १५
कुण्डल पर्वत – ७२-७५ ---------- १५
कुण्डल पर्वत के पर सोलह शिखर – ७६-८३---------- १७
कुण्डल पर्वत के शिखरों पर सोलह नागकुमार देव – ८४-८६ ---------- १७
कुण्डल पर्वत के भीतर सौधर्म ईशान लोकपालों की राजधानियाँ – ८७-९७---------- १९
कुण्डल पर्वत के बाहर त्रायस्त्रिंशकों और उनकी अग्रमहिषियों की राजधानियाँ – १०२-१०९--------- २१-२३
कुण्डल समुद्र – ११० ---------- २३
रुचक द्वीप – १११---------- २३
रुचक पर्वत – ११२-११६---------- २३
रुचक पर्वत पर शिखर – ११७-१२६ ---------- २३-२५
दिशाकुमारियाँ और उनके स्थान – १२७-१४२---------- २५-२९
दिग्हस्ति शिखर – १४३-१४८ ---------- २९-३१
रतिकर पर्वत पर शक्र ईशान सामानिक देवों के उत्पादक पर्वत और राजधानियाँ – १४९-१५५---- ३१-३३
जम्बूद्वीप आदि द्वीपों और समुद्रों के अधिपतिदेव – १५६-१६५---------- ३३-३७
तिगिञ्छि पर्वत – १६६-१७३ ---------- ३७
चमरचंचा राजधानी – १७४-२२५---------- ३९-४७
परिशिष्ट
(१) द्वीपसागरप्रज्ञप्ति प्रकीर्णक की गाथानुक्रमणिका---------- ४८-५२
(२) सहायक ग्रन्थ सूची---------- ५३-५४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org